3. किशोरावस्था की समस्याएँ और उनका प्रबंधन

Problems of Adolescence and their Management

किशोरावस्था को 'समस्याओं की आयु' कहा जाता है। बाल्यावस्था की अपेक्षा किशोरावस्था में समस्याओं की अधिकता होती है। किशोर स्वयं से अधिक परिवार वालों के लिए समस्या होता है। वांछित व्यवहार के बारे में ज्ञान का अभाव, शिक्षक, माता–पिता की अपेक्षाएं, जीवन के तनाव, दबाव आदि समस्याओं के प्रमुख कारण होते है। किशोरों को इस अवस्था में नई चुनौतियों का सामना करना होता है जो बाल्यावस्था की तुलना में अधिक जटिल होती है।

किशोरों को भाँति–भाँति की समस्याओं का सामना करना पड़ता है इस अवस्था की मुख्य समस्या समायोजन को लेकर होती है। एक तरफ तो उसे अपनी तीव्र शारीरिक वृद्धि, संवेगात्मक अस्थिरता एवं समाज में उसके बदलते परिदृश्य के साथ सामंजस्य बिठाना होता है तो दूसरी तरफ उसे स्वयं के लिये एक निश्चित कैरियर चुनना तथा वैवाहिक एवं सामाजिक उत्तदायित्वों को निभाने के लिये खुद को तैयार भी करना होता है। इसी समय वह गलत मित्र मण्डली एवं समस्याओं से तनावग्रस्त होकर कई बार शराब, तम्बाकू, सिगरेट, नशीली दवाओं के चक्कर में पड़कर स्वयं के अमूल्य जीवन को तबाह कर लेते हैं। यही नहीं कई बार तो वें चोरी, मारपीट, स्कूल या घर से भागना आदि अपराधों में भी लिप्त हो जाते हैं। लड़को

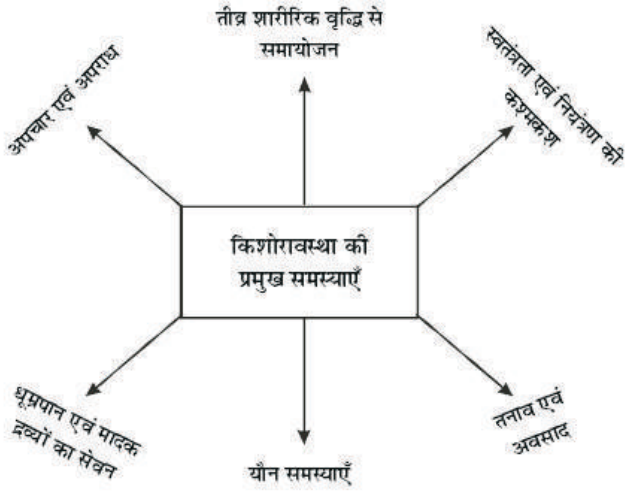

चित्र 3.1 किषोरावस्था की प्रमुख समस्याऐं

की तुलना में लड़कियों की समस्याएं अधिक होती है। इस अध्याय में हम किशोरावस्था में होने वाली मुख्य समस्याओं के बारे में विस्तार से पढ़ेंगे।

1. तीव्र शारीरिक वृद्धि से समायोजन :

किशोरावस्था के प्रारम्भ में शारीरिक वृद्धि एवं विकास अत्यन्त तीव्र गति से तथा विषमानुपातिक होता है। नवकिशोर अपने शरीर में अचानक होने वाले इन तीव्र परिवर्तनों के लिये तैयार नहीं होते हैं। कुछ बालक एकदम लम्बे तो कुछ मोटे–नाटे तो कुछ भयंकर कील–मुँहासों की समस्या से ग्रस्त रहते हैं। ऐसे बालकों को प्रायः सहोदरों व सहपाठियों द्वारा मजाक ही मजाक में कई नाम से जैसे लम्बू, तम्बू, मोमबत्ती, अगरबत्ती, बिजली का खंभा, मोटू, छोटू, पिंपल आदि कहा जाता है तो उन्हें कई बार भीतर तक झकझोर देता है। वृद्धि के साथ अनिवार्यतः होने वाले शारीरिक विषमानुपात तरूण बालक के अन्दर आकुलता पैदा कर देते हैं जो कि आतंक की सीमा तक पहुँच जाती है।

पूर्व किशोरावस्था में होने वाली शारीरिक वृद्धि के कारण पेशियाँ और हड्डियाँ तेजी से बढ़ती हैं तथा उनका पारस्परिक अनुपात भी बदल जाता है पेशियाँ लम्बाई में बढ़कर नई स्थितियों में आ जाती है। उनमें कुछ शारीरिक समन्वयों में असंतुलन एवं फुर्ती में अस्थायी मंदता आ जाती है। वे चलते–फिरते मेज–कुर्सी आदि से टक्कर खाने लगते हैं, संकरी दीवार पर चलना, हाथ छोड़कर साइकिल चलाना जैसे अनेक कौशलों में गड़बड़ा जाते हैं। फलतः बाल्यावस्था में प्राप्त गति संबंधी उपलब्धियाँ बिगड़ जाती है इसे भौंड़ेपन की अवस्था भी कहते हैं। उत्तर किशोरावस्था आते–आते व शारीरिक विकास पूर्ण होने पर समस्या स्वतः ही समाप्त हो जाती है।

2. स्वतंत्रता एवं नियन्त्रण की कश्मकश :

बाल्यावस्था के उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ बालक में शासन का प्रतिरोध करने का भाव बढ़ता जाता है तथा वह अधिकाधिक स्वतंत्र होने की चाह रखता है। शारीरिक वृद्धि एवं आकार–प्रकार में स्वयं को युवा प्रतिरूप में देखने के कारण किशोर स्वयं को बड़ा व शत प्रतिशत सही समझने लगता है तथा अपने निर्णय स्वयं लेना चाहता है, जबकि

वास्तव में किशोर अभी पूर्ण रूप से परिपक्व नहीं हो पाया है। फलतः उन्हें माता–पिता, पारिवारिक व सामाजिक सदस्यों द्वारा पूर्ण उत्तरदायित्व नहीं दिया जाता। किशोर प्रत्येक बात को वैज्ञानिक स्वरूप में देखता है तथा पुराने रीति रिवाजों व रुढ़ियों का प्रतिरोध करना चाहता है तथा घर व समाज के बड़े बुजुर्गों द्वारा लगाई गई किसी भी प्रकार की रोक–टोक एवं नियंत्रण से उन्मुक्त होना चाहता है। इस समय माता–पिता को चाहिये कि वे किशोरों को विद्याध्ययन के लिये विषय, व्यवसाय, कैरियर, विवाह के लिये जीवन साथी आदि के चुनाव में खुली सलाह एवं उपयुक्त मार्गदर्शन देवें न कि उन पर अपनी पसंद, इच्छाओं व कठोर अनुशासन को लादकर उन्हें अनावश्यक रूप से प्रतिबंधित करें।

3 तनाव एवं अवसाद :

तरूण बालक का किशोरावस्था की दहलीज पर कदम रखना ही समस्याओं एवं तनावों को आमन्त्रण देना है। किशोरों के पास तनावग्रस्त होने का कोई एक कारण ही नहीं होता है। वे विविध कारणों जैसे तीव्र शारीरिक वृद्धि से प्राप्त युवत्व आकार, बचपन व यौवन के बीच झूलता सामाजिक पड़ाव, पारिवारिक व सामाजिक परिपाटियाँ एवं प्रतिबंध, स्वयं के व्यक्तित्व, व्यवसाय व कैरियर तथा जीवन साथी के चुनाव, तीव्र संवेगशीलता व मनोस्थति के उतार चढ़ाव आदि के फलस्वरूप तनाव को झेलते हैं। तरूण बालक अपने बदलते हुए शरीर एवं भावों के बारे में जो चिन्ताएँ करते हैं, उन्हें अपने तक ही सीमित रखते हैं तथा उनके बारे में सोचते रहते हैं। सुन्दरता व आकर्षण न पाने पर स्वयं को हीन समझने लगते हैं और अंत में राई का पर्वत बना देते हैं। लड़कियाँ अपनी आकृति को लेकर अति चिंतित रहती हैं व दुबली पतली व छरहरी दिखने के लिये भूखी रहती हैं फलतः शारीरिक कमजोरी व अन्य समस्याऐ पैदा हो जाती हैं। किशोर का अपनी शक्ल सूरत पर होने वाला असंतोष उस समय और अधिक बढ़ जाता है जब वह अपनी बौद्धिक सामर्थ्य या व्यक्तित्व को अपनी आशाओं के अनुरूप नहीं पाता और निराश हो जाता है। उसमें असमर्थता एवं असुरक्षा की भावनाएँ बनी रहती हैं। सामाजिक व सांस्कृतिक दबावों के चलते तथा विद्यार्जन व व्यवसाय में जरा सी भी असफलता प्राप्त होने पर ये दुःखी हो जाते हैं और विविध कार्यों में अरुचि दिखाते हैं। कभी–कभी तो भावावेश में आकर किशोर आत्महत्या जैसे गलत निर्णय भी ले बैठते है। लम्बे समय तक चलने वाला यही तनाव, अपने गंभीर स्वरूप ''अवसाद'' में परिवर्तित हो सकता है, जिससे किशोर/किशोरी को उबारना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

इस अवस्था में माता–पिता व किशोर/किशोरी को चाहिये कि वे अल्पकालिक व छोटे–छोटे सूक्ष्म लक्ष्य निर्धारित करें, जिनकी प्राप्ति उनका उत्साह व कार्य करने की शक्ति बनाये रखें एवं वे अपने जीवन में दीर्घकालिक एवं अन्तिम (Ultimate) लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।

4. यौन समस्याएँ :

बाल्यावस्था से किशोरवस्था की ओर बढ़ने पर यौवनारम्भ में ही बालकों में यौन वृद्धि एवं विकास अपने चरमोत्कर्ष पर होता है तथा किशोरावस्था खत्म होते–होते बहुत शीघ्र ही तरूण बालक/बालिका एक आकर्षक नवयुवा या नवयुवती के रूप में दिखने लगते हैं। किसी भी किशोर/किशोरी के लिये यह यौन वृद्धि एवं परिपक्वता सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विषय होते हैं। किशोरावस्था में होने वाले ये परिवर्तन जिज्ञासा के विषय होते हैं तथा यदि समवयस्क मित्रों से पहले या बाद में हो तो उनमें भय मिश्रित आकुलता पैदा हो जाती है। हमारे समाज में पारिवारिक बड़े बुजुगों व विद्यालयी शिक्षकों आदि के द्वारा यौन विषयों पर सार्वजनिक रूप से कोई बातचीत नहीं की जाती तथा इसे एक निषेध विषय समझ कर टाल दिया जाता है। ऐसी स्थिति में किशोर/किशोरी घटिया साहित्य या मित्रों के अधकचरे ज्ञान का सहारा लेते हैं तथा अधिकतर भ्रमित रहते हैं।

पुराने समय में विवाह अल्पायु में ही कर दिये जाते थे जिससे किशोरावस्था की यौन इच्छाएं व उत्कंठाएं संतुष्ट हो जाती थी। आजकल विद्यार्जन व व्यावसायिक क्षेत्रों में बढ़ती स्वतंत्रता के कारण विवाह बड़ी उम्र में होने लगे हैं किशोर यौन विकास के विषय पर बड़ों से बातचीत नहीं कर पाते हैं और 'स्वयं' को समाज से अलग–थलग एक पृथक व्यक्तित्व के रूप में महसूस करते हैं। जबकि मीडिया युवक–युवतियों के अंतरंग संबंधों को खुले स्वरूप में प्रदर्शित करते हैं। वास्तविक समस्याएँ तो तब आती हैं जब हमारे किशोर फिल्म व मीडिया की इस काल्पनिक दुनिया को अपने वास्तविक जीवन में उतारने क प्रयास करते हैं। इन समस्याओं से उबरने के लिये किशोर–किशोरियों को चाहिए कि वे अपने उत्साह एवं ऊर्जा को संचित कर सकारात्मक रवैया अपनाते हुए विविध सृजनात्मक क्रियाकलापों जैसे नाटक, वाद–विवाद, संगीत, नृत्य, खेल, व्यायाम आदि में लगायें।

5. धूम्रपान एवं मादक द्रव्यों का सेवन :

बाल्यवस्था से किशोरवस्था में कदम रखने पर किशोरों में धूम्रपान व मादक द्रव्यों जैसे बीयर, शराब, तम्बाकू, गुटखा, नशीली दवाओं आदि के सेवन के प्रति झुकाव की प्रवृत्तियाँ भी लक्षित होने लगती हैं। किशोर के जीवन में आने वाली निम्न परिस्थितियां, समस्याएं तथा तीव्र संवेगशीलता की अवस्थाएँ उन्हें गलत मार्ग पर ढ़केलती हैं :

1. मित्रों द्वारा उकसाना एवं दबाव।
2. स्वयं को अपने मित्रों द्वारा स्वीकारे जाने की इच्छा।
3. शिक्षा या व्यवसाय में असफलता।
4. प्रेम में असफलता।
5. जाने–अनजाने में होने वाली गलतियों के लिये पारिवारिक व सामाजिक मित्रों से पड़ने वाली डाँट–फटकार।

6. समाज में स्वयं को युवा के रूप में देखने की उत्कंठा।
7. सामाजिक प्रतिष्ठा के चिह्न के रूप में।
8. घर परिवार व सामाजिक परिवेश में अकेला महसूस करने पर।
9. परिवार एवं पारिवारिक मित्रों के प्रति विरोध प्रदर्शन के लिये।
10. कभी–कभार उत्सुकता व जिज्ञासावश स्वयं इनका व प्रभाव आजमाने के लिये।
11. अज्ञानतावश मित्रों द्वारा सॉफ्ट ड्रिंक्स, पान या दवाई के रूप में दिये जाने पर।

उपरोक्त विविध परिस्थितियों में किशोर निम्न प्रकार के नशीले द्रव्यों का उपभोग करते हैं :–

6. मदिरापान : शराब में व्यग्रता/आकुलता को कम करने एवं संवेगों को शांत करने की क्षमता होती है। अतः कुछ किशोर स्वयं को दैनिक जीवन की चुनौतियों को सामना करने में असमर्थ पाने पर अपनी कमियों को छुपाने के लिये या समस्याओं से पलायन करने के लिये शराब का सहारा लेते हैं। शराब न केवल मनुष्य की स्मृति को भुलती है बल्कि इसके अत्यधिक सेवन से शारीरिक संतुलन व सामंजस्य भी बिगड़ जाता है। शराब के नशे में किशोर का स्वयं पर कोई नियंत्रण नहीं रहता तथा वह नकारात्मक व्यवहार जैसे गाली–गलौच, मार–पीट व बड़ों के साथ अभद्रता कर बैठता है।

7. धूम्रपान व तम्बाकू सेवन : तम्बाकू–सिगरेट, हुक्का, गुटखा एवं पान आदि के रूप में ली जाती है। किशोरों द्वारा धूम्रपान एवं पान चबाने को पुरूषत्व के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। किशोर–किशोरियों में धूम्रपान व तम्बाकू सेवन की आदत भी मित्र–मंडली के दबाव व हम उम्र समुदाय द्वारा स्वयं को स्वीकारें जाने की इच्छा के फलतः पड़ती है। तम्बाकू में उपस्थित हानिकारक तत्व निकोटीन शरीर को बहुत हानि पहुँचाता है तथा न केवल श्वसन संबंधी कई रोग पैदा करता है बल्कि विविध प्रकार के कैंसर की संभावनाओं को भी बढ़ाता है।

8. नशीली दवाइयाँ : कभी–कभी कुछ दवाइयों को बनाने में कुछ नशीले द्रव्यों का उपयोग किया जाता है जो कि विविध रोगों में लाभदायक होते हैं। अनावश्यक रूप से इन दवाइयों का सेवन व्यक्ति को इनका आदी बना देता है, साथ ही ये स्वास्थ्य को भी गंभीर नुकसान पहुँचाती हैं। इनके उपयोग से किशोरों की शारीरिक शक्तियों का क्षय होता है तथा वे अपनी पूरी शक्ति से कार्य नहीं कर पाते। दूसरी तरफ ये नशीली दवाइयाँ मंहगी भी होती हैं, फलस्वरूप व्यक्ति की आर्थिक स्थिति भी कमजोर हो जाती है। आजकल किशोरों में नशीले पदार्थों जैसे ब्राउन शुगर, गांजा, अफीम, चरस आदि का सेवन दिनों दिन बढ़ता जा रहा है। किशोर नशीली दवाईयाँ प्राप्त करने के लिये कई बार असामाजिक कार्य करने लगते है। एक बार नशे की लत पड़ जाने पर उसे छोड़ना बहुत कष्टदायक होता है।

आज के बदलते परिपेक्ष में न केवल हमारे किशोर बल्कि किशोरियाँ इन मादक द्रव्यों के चगुल में फँस जाती हैं क्योंकि वे अपनी बदलती हुई शारीरिक, सामाजिक, मानसिक, संवेगात्मक व यौन विकास संबंधी स्थितियों से सामंजस्य नहीं बिठा पाती हैं। किशोर–किशोरियों को चाहिये कि वे इन नशीले द्रव्यों से होने वाले दुष्प्रभावों को जानें, अपने आत्मविश्वास को बटोरें तथ सकारात्मक रवैया अपनाते हुए अपनी इच्छाशक्ति का सदुपयोग कर जीवन की विविध चुनौतियों का सामना करें।

6. अपचार एवं अपराध :

समाज के नियमों की अवहेलना एवं हिंसात्मक व्यवहार करना ही अपराध या अपचर है। जो व्यक्ति समाज के नियमों का पालन नहीं करता वह अपराधी कहलाता है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार कोई भी व्यक्ति जन्म से ही अपराधी नहीं होता तथा न ही असामाजिक व्यवहार एक ही रात में सीख लिया जाता है। व्यक्ति विशेष को जन्म के बाद एक अरसे तक मिलने वाली विषम परिस्थितियाँ ही उसे अपचारी बना देती हैं। जो किशोर अपराधी बनते हैं, उनकी दिक्कतें बचपन के दिनों से ही प्रारम्भ हो जाती है। इन किशोरों में अपराधी होने की प्रवृत्ति बचपन से ही देखी जा सकती है। उदाहरण के लिये अधिकतर किशोर किसी न किसी समय छोटी–मोटी चोरी कर रहे होते हैं या स्कूल से भाग जाते हैं लेकिन अपचारी किशोर प्रायः करता रहता है या अधिकतर समय स्कूल से बाहर रहता है।

किशोरावस्था समस्याओं के कारण व प्रबन्धन :

किशोर/किशोरियों के अपराधी प्रवृत्ति को अपनाने के मूल में विभिन्न कारक अपना योगदान देते हैं जैसे (i) शारीरिक दोष या खराब स्वास्थ्य के कारण हीन भावाना पैदा होना, (ii) माता–पिता दोनों या फिर माता या पिता की असमय मृत्यु होने के कारण उनको मिलने वाले प्यार व आत्मीय नियंत्रण क अभाव (iii) परिवार में बड़े बुजुर्गों का कड़ा अनुशासन (iv) सौतेली माता या पिता द्वारा तिरस्कृत व्यवहार (v) प्रतिदिन होने वाले माता–पिता के घरेलू झगड़े या तलाक (vi) परिवार में माता–पिता, बड़े भाई–बहनों या अन्य सदस्यों का अनैतिक कर्मो–झूठ बोलना, स्मगलिंग, अनैतिक यौन संबंधों में लिप्त होना। (vii) बुरे संगी–साथियों की संगति (viii) बालक के बौद्धिक कोशल में कमी या विद्यालय में पढ़ाई की अपर्याप्त सुविधाएं (xi) परिवार का सामाजिक आर्थिक स्तर उच्च या निम्न होना (x) परिवार में बालक की बहुत अधिक मार–पिटाई से उसका ढीठ बन जाना (xi) बालक का मंदबुद्धि होना (xii) किसी भी कारणवश बालक का मानसिक रूप से विक्षिप्त होना (xiii) घर परिवार या विद्यालय अच्छी चारित्रिक शिक्षा का अभाव होना (xvi) खली समय होने पर मनोरंजन के पर्याप्त साधनों, तथा स्वयं की सृजनात्मक रूचियों का अभाव होने पर खाली समय का सदुपयोग नहीं कर पाना (xv) अश्लील साहित्य पढ़ना तथा अश्लील चित्र व फिल्में देखना।

किशोर/किशोरी अपराधी व्यवहार अज्ञानता की बजाय रोष, वैर, अवज्ञा या शंका के भावों से प्रेरित होकर करता है। उसे महसूस होता है कि समाज ने उसे त्याग दिया है तथा समाज का उस पर कोई ऋण नहीं है। जब किशोर अपनी समस्याओं को उपर्युक्त मार्गदर्शन एवं सुविधाओं के अभाव में हल नहीं कर पाते हैं तो असामाजिक कार्यों की तरफ प्रवृत्त हो जाते हैं।

विद्यालय या कॉलेज में बौद्धिक कौशल व अन्य कौशलों में पिछड़ने पर किशोर शिक्षण संस्थानों से भागने लगते हैं, गलत संगति में फंस कर नशीले द्रव्यों, शराब व धूम्रपान के आदी हो जाते हैं। मादक द्रव्यों के नशे में आकर मित्रों व पारिवारिक सदस्यों से गाली–गलौची करते हैं, मार–पिटाई करते हैं। मादक दव्यों के लिये पैसा जुटाने के लिये चोरी–चकारी करते हैं। शैक्षणिक या व्यावसायिक क्षेत्रों में असफल होने पर डाँट–फटकार के डर के मारे घर में झूठ बोलते हैं, ऊट–पटांग माँगों को लेकर शिक्षण संस्थाओं व कार्यालयों में हड़तालें करवाते हैं, तोड़–फोड़ करते हैं। कभी–कभी ये अपनी नकारात्मक भावनाओं स्थलों पर तोड़ा–फोड़ी कर राष्ट्रीय सम्पदा को नुकसान पहुँचाते हैं, मारपीट आदि भी करते हैं। अधिक से अधिक पैसा कमाने की होड़ में कई बार किशोर गलत धंधों जैसे – चोरी–चकारी, तस्करी आदि में लिप्त हो जाते है। अपनी यौन व्यग्रताओं, आकुलताओं एवं कुंठाओं को निकालने के लिये उचित माध्यम नहीं मिलने पर ये किशोर यौन अपराधों में भी प्रवृत्त हो जाते है।

किशोरों में अपराध प्रवृत्तियों को पनपने से रोकने के लिये उन्हें बचपन से ही माता–पिता का उपयुक्त स्नेह, नियंत्रण, पूर्ण विश्वास व सुरक्षा का वातावरण प्राप्त होना चाहिये। परिवार में बड़े–बुजुर्गो व शिक्षकों को चाहिये कि वे अपना मृदु व्यवहार व अनुशासन बनाये रखते हुए किशोर/किशोरियों को उचित मार्गदर्शन देवें तथा उन्हें बुरी संगति से रोकें। विद्यालय में उपर्युक्त मार्गदर्शन व परामर्श प्रदान किया जाए। बच्चों की रुचियों को देखते हुए उन्हें अपने शैक्षणिक व व्यावसायिक क्षेत्र चुनने में पूरी–पूरी सहायता देवें तथा उनके उत्साह को निरन्तर सृजनात्मक दिशा प्रदान करते रहें। किशोर व किशोरियों को शिक्षक व माता–पिता के द्वारा उचित यौन शिक्षा दी जानी चाहिए।

महत्त्वपूर्ण बिन्दु :

1. किशोरावस्था को समस्याओं का काल कहा जाता है। किशोरों की मुख्य समस्या समायोजन को होकर होती है।
2. लड़कों की तुलना में लड़कियों में समस्याएं अधिक होती हैं।
3. किशोरावस्था के प्रारम्भ में शारीरिक वृद्धि एवं विकास अत्यन्त तीव्र गति से तथा विषमानुपातिक होता है फलस्वरूप कुछ शारीरिक समन्वयों में असंतुलन एवं फुर्ती में अस्थायी मंदता आ जाती है।
4. किशोर तीव्र शारीरिक वृद्धि से प्राप्त युवत्व, बचपन व युवा के बीच झूलते सामाजिक पड़ाव, पारिवारिक व सामाजिक परिपाटियों एवं प्रतिबंध, स्वयं के व्यक्तित्व, व्यवसाय व कैरियर तथा जीवन पारिवारिक व सामाजिक परिपाटियों एवं प्रतिबंध, स्वयं के व्यक्तित्व, व्यवसाय व कैरियर तथा जीवन साथी के चुनाव, तीव्र संवेगशीलता व मनोस्थिति के उतार–चढ़ाव आदि कारणों के फलस्वरूप तनाव को झेलते हैं।
5. बाल्यवस्था के उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ बालक में शासन का प्रतिरोध बढ़ता जाता है तथा वह अधिकाधिक स्वतंत्र होने की चाह रखता है।
6. किशोरों में होने वाले यौन परिवर्तन जिज्ञासा का विषय होते हैं। यदि वह समवयस्क मित्रों से पहले व बाद में हो तो उनमें भयमिश्रित आकुलता पैदा हो जाती है।
7. कई बार किशोर के जीवन में आने वाली परिस्थितियाँ, समस्याएँ तथा तीव्र संवेगशीता की अवस्था उन्हें धूम्रपान व मादक द्रव्यों जैसे शराब, तम्बाकू, गुटखा, नशीली दवाओं आदि के सेवन के लिए प्रेरित करती है।
8. किशोर/किशोरी जन्म से ही अपराधी नहीं होते हैं लेकिन उनमें इस अपराधी प्रवृति को अपनाने के मूल में विविध कारक बचपन से ही अपना योगदान देते हैं।
9. किशोरों में अपराध प्रवृत्तियों को पनपने से रोकने के लिए माता–पिता, शिक्षक एवं बड़े–बुजुर्गों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहता है। वे अपने मृदु–व्यवहार, स्नेह, विश्वास एवं सुरक्षा के वातावरण से किशोर–किशोरियों को उचित मार्गदर्शन दे सकते हैं।

अभ्यासार्थ प्रश्न :–

1. निम्न प्रश्नों के सही उत्तर चुनें:

(i) किशोरावस्था को कहते हैं –
(अ) निरोगी अवस्था (ब) तनावहीन अवस्था
(स) समस्याओं का काल (द) उपर्युक्त सभी

(ii) बाल्यावस्था के उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ बालक में शासन का प्रतिरोध करने का भाव बढ़ता है तथा व अधिक ..... होने की चाह करता है।
(अ) स्वतंत्र (ब) निर्भर
(स) बेधड़क (द) मर्यादित

(iii) बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर बढ़ने पर यौवनारम्भ में ही बालक की ..... वृद्धि व ..... विकास चरमोत्कर्ष पर होती है।
(अ) शारीरिक (ब) यौन
(स) मानसिक (द) अ और ब

(iv) किशोरों में अपराधी प्रवृत्तियों को पनपने से रोकने के लिए योगदान देते है।

(अ) माता–पिता (ब) बड़े–बुजुर्ग

(स) शिक्षक (द) उपर्युक्त सभी

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :

(i) किशोरावस्था को ..... की आयु कहा जाता है।

(ii) किशोरावस्था में शारीरिक समन्वयों में असंतुलन एवं फुर्ती में अस्थाई ..... आ जाती है।

(iii) किशोर प्रत्येक बात को ..... दृष्टिकोण से देखता है तथा पुराने रीति रिवाजों व रुढ़ियों का प्रतिरोध करता है।

(iv) विद्यार्जन तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में बढ़ती स्वतंत्रता के कारण आजकल विवाह ..... उम्र में होने लगे है।

(v) दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में असमर्थ होने पर कई किशोर अपनी कमियों को छुपाने के लिए ..... का सहारा लेले हैं।

(vi) समाज के नियमों की अवहेलना एवं हिंसात्मक व्यवहार करना ही ..... या ..... है।

(vii) लड़कों की तुलना में लड़कियों की समस्याएं .... होती है।

3. किशोरावस्था को 'समस्याओं का आयु क्यों कहते हैं ? समझाइये।

4. निम्न पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें :

(i) तीव्र शारीरिक वृद्धि से समायोजन

(ii) यौन समस्या

(iii) स्वतंत्रता एवं नियंत्रण की कश्मकश

5. किशोरावस्था में किशोर/किशोरी किस प्रकार के तनावों से ग्रसित रहते हैं ?

6. किशोरों में अपराधी प्रवृत्ति रोकने में माता–पिता तथा शिक्षका का योगदान होता है, अध्यापक की सहायता से कक्षा में इस विषय पर स्वयं के अनुभवों के आधार पर चर्चा करें।

उत्तरमाला :

1. (i) स (ii) अ (iii) द (iv) द

2. (i) समस्याओं (ii) मंदता (iii) वैज्ञानिक (iv) बड़ी (v) मादक द्रव्यों (vi) अपचार, अपराध (vii) अधिक